सोमवार
14 फरवरी 2022

पृष्ठ 4
म्यूजिक थेरेपी: संगीत में झूमकर भी स्वास्थ्य को मिल सकते हैं कई फायदे

पृष्ठ 5
17 फरवरी को रिलीज होगी यामी गौतम की फिल्म ए थर्सडे

- देहरादून
- वर्ष 30
- अंक 21
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

आज का विचार

पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढ़ाए, पाप की कमाई को मैंने नष्ट कर दिया है।
— अथर्ववेद

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक
आर.एन.आई.- 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

मतदाताओं ने किया 632 प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला

संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड विधानसभा के लिए होने वाले चुनाव में आज अपने मताधिकार के जरिए चुनाव मैदान में उतरे 632 प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला राज्य के 82.66 लाख मतदाताओं द्वारा किया जा रहा है। समाचार लिखे जाने तक (3 बजे तक) 49 फीसदी मतदान की खबरें है राज्य में शांतिपूर्ण मतदान जारी है।

विधानसभा की सभी 70 सीटों के लिए आज सुबह 8 बजे शुरू हुए मतदान की प्रारंभिक रफ्तार धीमी रही। निर्वाचन आयोग द्वारा इस बार मतदान के लिए बनाये गये 11.30 हजार मतदान केंद्रों पर सुबह 8 बजे से मतदान शुरू हुआ। राज्य में पहले एक घंटे में सिर्फ 5.15 फीसदी लोगों ने ही अपना वोट डाला था। खासकर राज्य के ऊंचाई वाले इलाकों में मतदान की रफ्तार कम रही। उत्तरकाशी जहां 2.13 व बागेश्वर में 2.31 व पौड़ी में 2.51 व चमोली जहां 3.49 फीसदी मतदाताओं ने पहले एक घंटे में अपना मतदान किया। मतदान की गति अत्यंत ही धीमी रही। लेकिन इसके बाद लगातार मतदाताओं का रुझान बढ़ता देखा गया। पहले घंटे में कुल मतदान औसतन 5.15 फीसदी रहा वहीं अगले दो घंटे में यह मतदान प्रतिशत 11 बजे तक बढ़कर 20 प्रतिशत के आसपास पहुंचता दिखा।

अच्छी बात यह है कि मतदान के दिन मौसम खुशगवार रहा। धूप खिलने के साथ ही मतदान केंद्रों में भीड़ बढ़ती

●शुरुआती दौर में कम रही वोटिंग की रफ्तार
●तीन बजे तक 49 फीसदी मतदान हुआ

देखी गई। हालांकि राज्य के मैदानी जनपदों और शहरी क्षेत्रों में सुबह से ही मतदान केंद्रों पर मतदान के लिए लोगों की लंबी-लंबी कतारें लग गई। राज्य में 12 बजे तक 28 फीसदी और एक बजे तक 35 फीसदी लोग अपना वोट डाल चुके थे। दोपहर एक बजे तक राजधानी दून में 34.94 तथा उधम सिंह नगर में 40 फीसदी, उत्तरकाशी में 40 फीसदी चंपावत में 34.66 फीसदी तथा अल्मोड़ा में 31.90 फीसदी तथा पिथौरागढ़ में 29.38 फीसदी मतदाताओं द्वारा अपने मत डाले जा चुके थे आज मतदान शाम 6 बजे तक चलेगा।

यहां यह उल्लेखनीय है कि राज्य में अब तक हुए 4 विधानसभा चुनाव के दौरान 2012 में हुए चुनाव में सर्वाधिक 66.17 फीसदी मतदान हुआ था वहीं पिछले विधानसभा चुनाव में मतदान का यह प्रतिशत 64.72 फीसदी रहा था। लेकिन इस बार कोरोना और मौसमी विसंगतियों की मार के बीच होने वाले इस चुनाव में मतदान 60 प्रतिशत से ऊपर जा सकेगा? इसकी संभावनाएं कम ही दिखती हैं।

राज्य की 70 सीटों पर हो रहे इस चुनाव में भाजपा और कांग्रेस ने सभी 70 सीटों पर अपने प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतारे हैं वही आम आदमी पार्टी भी सभी 70 सीटों पर चुनाव लड़ रही है जबकि बसपा 60 और सपा 56 सीटों पर चुनाव लड़ रही है तथा यूकेडी ने 46 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे हैं। जबकि 260 के लगभग अन्य प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं जिनका भाग्य का फैसला अब ईवीएम में कैद हो चुका है। ◀◀ शेष पृष्ठ 4 पर

हिजाब विवाद: कर्नाटक में 10वीं के स्कूल खुले, 200 मीटर के दायरे में धारा 144 लागू

बेंगलुरु। कर्नाटक में हिजाब विवाद के बीच सोमवार से ९वीं और १०वीं क्लास के स्कूल खुले। लेकिन मामले की गंभीरता को समझते हुए स्कूलों के आसपास धारा १४४ लागू कर दी गई है। वहीं राज्य सरकार ने प्रथम श्रेणी के कॉलेजों, स्नातकोत्तर, तकनीकी शिक्षा के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को १६ फरवरी तक बंद रखा है। उडुपी में भी स्कूल खुल गए।

बता दें कि यही से हिजाब को लेकर विवाद शुरू हुआ था। असामाजिक तत्वों और उपद्रवियों को आगाह करने के मकसद से रविवार को शिवमोगा में पुलिस ने फ्लैग मार्च भी किया था। वहीं, उडुपी में ११ फरवरी को फ्लैग मार्च किया गया था। उडुपी के कमिश्नर एम कूर्मा के मुताबिक, सभी हाईस्कूलों के आसपास २०० मीटर के दायरे में धारा १४४ लागू कर दी गई है। यहां एक साथ ५ लोग इकट्ठे नहीं हो सकेंगे। इस दौरान विरोध रैलियां, नारेबाजी, भाषण आदि पर भी रोक है। यहां १९ फरवरी तक धारा १४४ लागू रहेगी। २० फरवरी को रविवार है। बता दें कि कर्नाटक में हिजाब विवाद की शुरुआत उडुपी के एक कॉलेज से हुई थी। यहां जनवरी में हिजाब पर बैन लगा दिया था। इस मामले के बाद उडुपी के ही भंडारकर कॉलेज में भी ऐसा ही किया गया। अब यह बैन शिवमोगा जिले के भद्रवती कॉलेज से लेकर तमाम कॉलेज तक फैल गया है। इस मामले को लेकर रेशम फारूक नाम की एक छात्रा ने कर्नाटक हाईकोर्ट याचिका दायर की है।

पिछले 24 घंटों में कोविड-19 के 34113 नए मामले सामने आए, 91930 लोग संक्रमण से ठीक हुए

नई दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण के नए मामलों में लगातार गिरावट जारी है। इसी क्रम में भारत में पिछले २४ घंटों में कोविड–१९ संक्रमण के ३४,११३ नए मामले सामने आए हैं, जिसके बाद देश में कुल मामलों का आंकड़ा ४,२६,६५,५३४ हो गया है।

बता दें कि रविवार के मुकाबले आज नए कोरोना मामलों में २४ प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई है। वहीं, ९१,९३० ऐसे भी रहे जो इस बीमारी से ठीक हुए, जिसके बाद कोरोना से हुई कुल रिकवरी का आंकड़ा ४,१६,७७,६४१ हो गया है। पिछले २४ घंटों में कोविड–१९ संक्रमण से ३४६ लोगों की मौत हुई। ऐसे में अब मरने वालों का आंकड़ा ५

लाख ०९ हजार ०११ हो गया है। देश में अभी भी ४,७८,८८२ सक्रिय मामले मौजूद हैं। दैनिक इस दौरान दैनिक पॉजिटिविटी रेट ३.१९ प्रतिशत रहा।

मालूम हो, रविवार को देश में कोरोना के ४४,८७७ नए केस सामने आए थे। वहीं, इस दौरान ६८४ लोगों की मौत कोरोना से मौत हुई थी, जिसके बाद कोरोना से मरने वालों की कुल संख्या बढ़कर अब ५०८६६५ हो गई थी। देश में रविवार को दैनिक पॉजिटिविटी रेट ३.१७ प्रतिशत था, जबकि कल सक्रिय मामले ५ लाख ३७ हजार ४५ थे।

असम में सभी कोविड पाबंदियां मंगलवार से हटा ली जाएंगी राज्य में रिकवरी रेट ९८.५६ फीसदी है हटाए जानेवाले प्रतिबंधों में हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों और अस्पतालों में अनिवार्य कोरोना परीक्षण सुविधाएं शामिल हैं। साथ ही रात का कर्फ्यू भी वापस ले लिया जाएगा। असम सीएम सरमा ने ट्वीट में लिखा कि गोवा १५ फरवरी से हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों और अस्पतालों में सभी कोरोना अनिवार्य परीक्षण सुविधाओं को वापस ले लेगा।

दून वैली मेल

संपादकीय

अधिकतम मतदान जरूरी

आज दूसरे चरण का मतदान हो रहा है इस चरण में उत्तराखंड की सभी 70 सीटों और उत्तर प्रदेश के 9 जिलों की 55 सीटों सहित कुल 125 विधानसभा सीटों के लिए वोट डाले जा रहे हैं। भले ही चुनाव प्रचार के दौरान राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों ने अपने चुनावी लोक लुभावन भाषणों और घोषणा पत्र के जरिए जनता से कुछ भी कहा गया हो और चुनाव प्रचार थमने के बाद मतदान से पूर्व सोशल मीडिया पर तरह-तरह के आपत्तिजनक ऑडियो और वीडियो के जरिए दुष्प्रचार में भी कोई कोर कसर उठाकर न रखी गई हो लेकिन आम लोग या जिन्हें मतदाता कहा जाता है उन पर इसका बहुत अधिक प्रभाव होता नहीं दिख रहा है। भले ही यह दुखद है कि इस चुनाव को भी हर बार की तरह जातीय और सांप्रदायिक रंग देने में नेताओं और असामाजिक तत्वों द्वारा अपनी कोशिशों में कोई कमी नहीं रखी गई है लेकिन काफी हद तक समझदार हो चुके परिपक्व मतदाताओं पर इसका वैसा असर नहीं देखा जा रहा है जैसा पूर्व चुनावों में रहा है। हिंदुस्तान-पाकिस्तान जिन्ना और गन्ना से लेकर हिजाब और अयोध्या, काशी से लेकर मथुरा तक के तमाम मुद्दे चुनावी अखाड़े में कुंद ही नजर आए हैं। चुनाव में लोगों ने महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी के मुद्दों को भी कम अहमियत नहीं दी है इसमें कोई दो राय नहीं है कि देश की जनता विकास और अमन शांति को सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखती है। सब की चाहत यही है कि उनके प्रांत में एक ऐसी सरकार बने जो भय मुक्त और भ्रष्टाचार मुक्त शासन प्रशासन दे सके लेकिन इसके बीच भावनात्मक मुद्दों के असर को भी नकारा नहीं जा सकता यह सोचना गलत होगा अगर ऐसा होता तो फिर राजनीतिक दलों द्वारा इस आधार को सामने रखकर प्रत्याशी चयन भी नहीं किया जाता। और न चुनाव जातीय आधार पर जनगणना का विषय चुनावी मुद्दों में शामिल हो पाता। मतदाताओं के पास अपने वोट पर फैसला करने की लिए उनके अपने-अपने मापदंड है जिसके आधार पर वह अपना वोट दे रहे हैं। समय के साथ चुनाव के तौर-तरीके ही नहीं बदले हैं मतदान की प्रक्रिया में भी बदलाव आया है। लेकिन चिंतनीय मुद्दा यह है कि मतदान के प्रति रुझान में अभी भी कोई खास फर्क आता नहीं दिखा है। बीते 5 दशकों में यह मतदान का प्रतिशत सिर्फ 15 फीसदी ही आगे बढ़ सका है और इसकी सुई अभी भी 60 फीसदी के आस-पास ही अटकी हुई है। जबकि निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाताओं को जागरूक बनाने और उनकी सुविधाओं को बढ़ाने की तमाम कोशिशें की गई है। इसका एक अहम कारण है नेताओं और राजनीतिक दलों की विश्वसनीयता में आई कमी भी है। एक देश के मजबूत लोकतंत्र के लिए जन सहभागिता का अधिकतम होना जरूरी है जब तक सिर्फ आधे मतदाता सरकार बनाते रहेंगे लोकतंत्र मजबूत नहीं हो सकता है इसके लिए 75 से 80 फीसदी मतदान संतोषजनक कहा जा सकता है। जब सब कुछ डिजिटल हो रहा है तो मतदान भी घर बैठे डिजिटल क्यों नहीं हो सकता। इस पर विचार करने की जरूरत है। हो सकता है कि इससे चुनावी व्यवस्था और पारदर्शी, शुभम व सुदृढ़ हो जाए।

श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक मनाया गया गुरु हर राय जी का प्रकाश पर्व

संवाददाता

देहरादून। गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा, आढ़त बाजार, देहरादून के तत्ववाधान मे आज श्री गुरु हर राय जी का 392 वा पावन प्रकाश पर्व श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक कथा, कीर्तन के रूप मे मनाया गया।प्रातः नितनेम के पश्चात भाई अमन दीप सिंह ने शब्द 'ऐसे गुर को बल बल जाइये, आप मुक्त मोहे तारे' अखण्ड पाठ के भोग के पश्चात हैड ग्रंथी भाई शमशेर सिंह ने कहा कि गुरु हर राय साहिब जी ने रोगियों के लिए कीरतपुर साहिब मे एक बहुत बड़ा अस्पताल खोला जहाँ पर गरीब संगत निशुल्क इलाज करवाती थी। कीरतपुर साहिब मे बहुत सुन्दर बाग लगवाए जहाँ पर जीवों की सेवा की जाती थी, गुरवाणी एवं कुदरत को गुरु साहिब बहुत प्यार करते थे। भाई गुरदियाल सिंह ने शब्द ' मेरा मात पिता हर राया' भाई सतवंत दिंघ ने शब्द 'हक परवर हक केस करता हर राय' एवं भाई प्रीतम सिंह लिटिल ने शब्द 'सा धरती भई हरयावली जिथे मेरा सतगुर बैठा आये' का गायन कर संगत को निहाल किया। कार्यक्रम का संचालन सेवा सिंह मठारु ने किया। इस अवसर पर प्रधान गुरबक्श सिंह राजन, जनरल सेक्रेटरी गुलजार सिंह, उपाध्यक्ष चरणजीत सिंह चन्नी, सचिव अमरजीत सिंह छाबड़ा, राजिंदर सिंह राजा, अरविन्दर सिंह रत्रा, रणजीत सिंह आदि उपस्थित थे।

उर्वरा विचार जो बदल दे तकदीर

रेनू सैनी

आज स्टार्टअप और नए विचारों को मंच प्रदान करने का स्वर्णिम दौर चल रहा है। जिस किसी के पास भी अनूठा विचार है, वह 'शार्क टैंक इंडिया' जैसे अनेक मंचों के माध्यम से न केवल देश अपितु विदेश में भी अपने उत्पाद से यश, धन और सम्मान प्राप्त कर सकता है। चिप्स इस समय बच्चों से लेकर बड़ों तक का पसंदीदा फास्ट फूड है। बातों-बातों में अनेक चिप्स के पैकेट खा लिए जाते हैं। पिकनिक से लेकर किसी भी कार्यक्रम स्थल पर चिप्स को आसानी से ले जाया जा सकता है। लेकिन ज्यादा चिप्स खाने से बच्चों व बड़ों में मोटापा घर कर जाता है। इसके साथ ही शरीर में पोषक तत्वों की कमी भी हो जाती है। यह बात लगभग हम सभी जानते हैं, लेकिन इस समस्या को 'आकस्मिक लाभ' के दृष्टिकोण से सुलझाया अनीश बसु रॉय और सागर भालोटिया ने। इन्होंने 'शॉर्क टैंक इंडिया' में अपने स्नैक ब्रांड 'नेवर फ्राइड, नेवर बेक्ड' पॉप्ड आलू चिप्स का शानदार आइडिया प्रस्तुत किया। सागर और अनीश ने वर्ष २०19 में बैंगलोर स्थित स्टार्टअप-टैगजेड फूड ब्रांड की स्थापना की। यह ब्रांड पोषण को छोड़े बिना स्नैक्स के लिए लोगों की मांग को पूरा करती है और उन्हें समुचित पोषण भी प्रदान करती है। इन दोनों को यह विचार इसलिए आया कि चिप्स इन्हें भी बहुत पसंद थे। एक दिन अचानक इन्हें विचार आया कि कुछ ऐसा नहीं हो सकता कि चिप्स इस तरह से बनाए जाएं कि वे स्वाद के साथ-साथ पोषण में भी सब को आकर्षित करें। बस फिर इन्होंने नोटबुक में इस विचार को नोट कर लिया और उसी दिशा में जुट गए।

इसी तरह बिहार के भागलपुर जिले के नया टोला दुधेला निवासी निक्की कुमार झा ने अपने गृह जिले के किसानों के लिए 'सब्जी कोठी' नामक आविष्कार तैयार किया है। इससे किसानों की फसलों को सुरक्षित रखने में आसानी हो रही है। पहले इसके लिए उन्हें कोल्ड स्टोरेज जाना पड़ता था। 'सब्जी कोठी' में फ्रिज के बजाय बिजली की खपत भी काफी कम होती है और इसमें सब्जियों व फलों को तीन से ३० दिन तक ताजा रखना आसान हो गया है। निक्की कुमार झा जब किसानों के सब्जी, फलों को सड़ता हुआ देखते थे तो उन्हें बहुत दुख होता था। एक दिन उन्हें भी यह विचार आया कि क्यों न कुछ ऐसा किया जाए, जिससे सब्जी व फलों को कम लागत पर अधिक समय तक ताजा रखा जा सके।

ये दोनों ही खोज देश में तेजी से प्रसिद्ध हो रही हैं। ये दोनों ही स्टार्टअप 'आकस्मिक लाभ' से आरंभ हुए। निःसंदेह विज्ञान की खोजों ने व्यक्ति के जीवन को बेहद सरल बना दिया है। अनेक सुविधाएं आज व्यक्ति के केवल एक बटन दबाने पर काम करना प्रारंभ कर देती हैं। विज्ञान के अनेक महत्वपूर्ण आविष्कार वैज्ञानिकों की जीवनभर की मेहनत थे तो कुछ आविष्कार ऐसे भी थे जो वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में तब उर्वर हुए जब वे सो रहे थे, स्वप्न देख रहे थे, यात्रा कर रहे थे या किसी से वार्तालाप कर रहे थे। इन आविष्कारों ने मूर्त रूप तब लिया जब आविष्कारकों ने उन्हें एक स्वरूप प्रदान कर विश्व के सामने प्रस्तुत किया।

तनावरहित ध्यान के पल, जब कोई अप्रत्याशित चीज मानसिक परिवेश में प्रवेश कर जाती है और एक नए व उर्वर संबंध को प्रेरित कर देती है। ऐसे संयोगवश जुड़ावों और खोजों को ही 'आकस्मिक लाभ' के नाम से जाना जाता है। यानी कि किसी ऐसी चीज का होना, जिसकी आशा नहीं की जा रही थी लेकिन अचानक मस्तिष्क में उपजे एक विचार ने उसे प्रत्यक्ष कर दिया।

ईश्वर ने सभी व्यक्तियों को बुद्धि और कल्पना करने की शक्ति प्रदान की है। इस अद्भुत शक्ति से ही प्रत्येक व्यक्ति 'आकस्मिक लाभ' की स्थिति उत्पन्न कर सकता है। आकस्मिक लाभ के लिए दो कदम उठाए जाने अनिवार्य हैं :-

पहला कदम है, अपनी खोज को यथासंभव अधिकतम बड़ा और विस्तीर्ण कर लेना। जब हम दिमाग में किसी कार्य को करने की ठान लेते हैं तो हमारा अवचेतन मन उस तरह की अनेक स्थितियां और परिस्थितियां हमारे सामने उजागर करता रहता है और हम परिणाम तक पहुंच जाते हैं। हमारा मस्तिष्क सूचनाओं की विविधता से लगातार रोमांचित और प्रेरित होता रहता है। इस तरह कुछ समय बाद हमारे दिमाग की मानसिक गति ऐसी बन जाती है, जिससे वह छोटी से छोटी संयोगवश घटना से भी उर्वर विचार को जन्म दे देता है और यही उर्वर विचार आगे चलकर स्टार्टअप का रूप ले लेता है।

'आकस्मिक लाभ' के लिए दूसरा कदम है भावना का खुलापन और लचीलापन कायम करना। कई बार व्यक्ति खोज के पलों के बीच राहत के पल भी तलाश लेता है। इनमें पैदल चलना, कुछ गुनगुनाना, किसी से बात करना, हंसना, झपकी लेना, सपने देखना आदि शामिल है। राहत के पलों में कई बार अचानक ही ऐसा उर्वर विचार दिमाग में कौंध जाता है, जो बहुत बड़े आकस्मिक लाभ का जन्मदाता बन जाता है।

'आकस्मिक लाभ' की आदत प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर डाल सकता है और अनेक उर्वर विचारों को स्टार्टअप का रूप दे सकता है। इसके लिए ज्यादा कुछ नहीं करना है बस छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना है मसलन, जिस पल कोई विचार, हल या विषय आए, उसे तुरंत नोट कर लें। साथ ही विचार से जुड़े कोटेशन, रेखाचित्र व उससे संबंधित हर चीज को नोट कर लें। किसी अनुपयोगी विचार को भी ध्यान से पढ़ने पर कई बार उसमें से भी सृजनात्मक स्टार्टअप का तरीका निकल आता है।

अध स्मा ते चर्षणयो यदेजानिन्द्र त्रातोत भवा वरूता।
अस्माकासो ये नृतमासो अर्य इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः।।

(ऋग्वेद ६–२५–७)

हे परमेश्वर ! जो लोग दुष्टों से भयभीत हैं उनके डर को आप दूर करो। जो हमारे नेता राष्ट्र के हित के लिए कार्य कर रहे हैं और जो ज्ञानी हमें मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं आप उनका संरक्षण करें।

O God ! You take away the fear of those who are afraid of the wicked. Protect our leaders who are working for the benefit of the nation and the wise men who show us the path of salvation. (Rig Veda 6-25-7)

खुशहाली की राहें

दिलबाग सिंह विर्क

प्रेम ही संसार की नींव है। हमारे मोहल्ले में एक शिक्षक महोदय ने कुत्ते के छोटे-छोटे बच्चों की सेवा -सुश्रुसा की। उन्हें टीके लगवाए। वर्क फ्रॉम होम करते हुए बिटिया ने कुछ समय उनकी सेवा-सुश्रुषा के लिए निकाला। मैंने उस डॉग लवर से बातचीत भी की, उसने बताया कि वह उनकी सेवा इसलिए करता है कि उसे आत्म संतुष्टि मिली। मुझे अच्छी तरह से याद है कोविड-19 के पहले दौर में भयभीत लोग अपने-अपने घर के भीतर थे परंतु सरकारी कर्मचारी पूरी मुस्तैदी से फील्ड में घूम रहे थे। मेरे दो सहकर्मी अक्सर अपनी कार में चारा खरीदते थे तथा सड़क के किनारे खड़ी भूखी गायों को खिलाया करते थे। तभी पता चला कि कुछ आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सुबह जब लोक सेवा के लिए जाती थीं तो साथ में अपने सामर्थ्य अनुसार कुछ बिस्कुट और कुछ रोटी या खाद्य पदार्थ लेकर जाती थीं। यकीन मानिए उन दिनों मेरी दोस्ती गिलहरी से हो चुकी थी। सुबह 5 बजे नींद खुलती थी और मैं छोटी सी कटोरी में पानी तथा कुछ दाने वगैरह डाल दिया करता था। गिलहरियां आतीं, दाने खातीं और चली जातीं। लेकिन एक दिन बहुत देर से उठने के कारण गिलहरियों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। उनका यह प्रेम देखकर ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास हो गया। ज़हर अगर एक बूंद भी होता है या उससे आधा भी, असर जरूर करता है। बहुत दिनों तक किसी सरफेस को आप अनदेखा करें तो पाएंगे कुछ दिनों में उस सरफेस पर आपका अधिकार न होकर धूल के कणों का हो जाता है। जीवन के लिए यही एक सिद्धांत है कि अपने मानस पर जम रही धूल को हटाते जाइए। किसी के प्रति नजरिया नेगेटिव रखिए तो वह व्यक्ति बहुत भयानक नजर आएगा। मन उसके आते ही उत्तेजना से भर जाएगा और सुलगने लगेगी विध्वंसक आग। आप दुनिया को अपने तरीके से चलाना चाहते हैं और जो आप के तरीके को स्वीकार नहीं करता उससे आप घृणा करने लगते हैं। अक्सर जब आप किसी के लिए कुछ करते हैं या पारिवारिक रिचुअल्स में अर्थात् पारिवारिक परंपराओं के कारण कुछ आर्थिक, मानसिक व शारीरिक रूप से करते हैं यह कार्य ईश्वर के अलावा किसी के कारण नहीं होता। अपने कार्यों का बखान करवाना, करना तथा जिसके लिए कार्य किया है उसे अपना जरखरीद गुलाम मान लेना। जब वह व्यक्ति परिस्थितिवश आप की गुलामी न स्वीकार करे तो उसे बेइज्जत करना या बार-बार उसे अहसास दिलाना। फिर उस पर क्रोध व्यक्त करना, कुटिल तथा व्यंग्यात्मक शैली में बोलना क्रोध और कुंठा का जनक है। इसलिए ऐसी शैली बदलिए और प्रसन्न रहिए।

पहली बार मतदान कर पोलिंग बूथ से बाहर आती युवा मतदाता।

मतदान के लिए पोलिंग बूथ पर लगी मतदाताओं की लम्बी लाईन।

पहाड़ और शहर के बीच सन्तुलन

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। आध्यात्मिक गुरू आचार्य बिपिन जोशी ने अपने पिता डा० मथुरा दत्त जोशी और माता श्रीमती भागवती जोशी के साथ अपने पैतृक गांव ग्राम मज्यूली, विकास खण्ड धारी विधान सभा भीमताल नैनीताल में आज प्रातः ८ बजे मतदान किया। उनके सुपुत्र एडवोकेट तनुज जोशी ३५० किलोमीटर की पर्वतीय और मैदानी यात्रा करते हुए अपनी माता और बहिन के साथ फ्लावर डेल स्कूल गढ़ी कैंट देहरादून में मतदान करेंगे। आचार्य जोशी के पावन सानिध्य में लगभग डेढ माह तक मतदाता जागरूकता अभियान सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में चलाया गया था।

बहुमत के तर्क और लोकतांत्रिक मूल्य

विश्वनाथ सचदेव

हमारी जनतांत्रिक व्यवस्था में सरकार भले ही प्रधानमंत्री चलाते हों, पर कहलाती वह राष्ट्रपति की ही सरकार है। इसीलिए, जब राष्ट्रपति संसद के दोनों सदनों को संबोधित करते हुए अपना अभिभाषण देते हैं तो सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए वे यही कहते हैं कि 'मेरी सरकार' ने यह-यह किया- फिर भले ही वे सरकार के किसी कृत्य से सहमत हों या न हों। राष्ट्रपति के इस बार के अभिभाषण में भी यही गिनाया गया कि सरकार ने क्या-क्या किया है, और यह भाषण पढ़ भले ही राष्ट्रपति रहे हों, पर उसके हर शब्द पर सरकार की स्वीकृति होती है।

फिर संसद में दोनों सदनों में इस पर बहस होती है, जिसे राष्ट्रपति के अभिभाषण के लिए धन्यवाद प्रस्ताव के रूप में रखा जाता है। यह प्रस्ताव तो पारित होना ही होता है, पर विपक्ष को अवसर अवश्य मिल जाता है सरकार के कार्यों की आलोचना करने का। अवसर सरकारी पक्ष को भी मिलता है अपनी बात रखने का, विपक्ष की आलोचना का जवाब देने का। स्पष्ट है, एक गम्भीर बहस का अवसर होता है यह, पर अक्सर देखा गया है कि संसद में इस अवसर का समुचित उपयोग नहीं होता। निस्संदेह कुछ भाषण बहुत अच्छे होते हैं, पर ज्यादातर भाषण आरोपों-प्रत्यारोपों की बलि चढ़ जाते हैं। बहरहाल, राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद-प्रस्ताव पर हुई बहस में भी कुछ बातें सचमुच रेखांकित किये जाने लायक हैं। इनमें से एक कांग्रेस के नेता राहुल गांधी का वक्तव्य भी है। राहुल बहुत अच्छे वक्ता नहीं माने जाते, पर 'दो भारत' वाला उनका यह भाषण निश्चित रूप से ध्यान आकर्षित करने वाला था। यह तथ्य अपने आप में भयावह है कि स्वतंत्रता के इस कथित 'अमृत-काल' में देश की अधिसंख्य आबादी गरीबी का जीवन जी रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, देश के लगभग साढ़े आठ करोड़ नागरिक घोर गरीबी में जीते हैं। 15 करोड़ और भारतीय गरीबी रेखा से नीचे की स्थिति में पहुंच जाएंगे। इसके बरक्स देश में अरबपतियों की संख्या में वृद्धि आर्थिक विषमता की बढ़ती खाई की भयावहता ही उजागर करती है। देश में शीर्ष के दस प्रतिशत लोगों के पास आज जितनी सम्पत्ति है उतनी देश की आधी आबादी की कुल सम्पत्ति भी नहीं है। यही हैं वे दो भारत, जिनके बीच की खाई को पाटना ज़रूरी है और यह काम नहीं हो रहा। इसका गम्भीरतापूर्वक अध्ययन होना चाहिए।

बहुत पुरानी बीमारी है यह आर्थिक विषमता। वर्ष 1963 में, यानी आज से आधी सदी पहले भी हमारी संसद में इस विषय को लेकर बहस हुई थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की सुरक्षा-व्यवस्था पर 25 हज़ार रुपये प्रतिदिन खर्च होने का सवाल उठाते हुए समाजवादी नेता डॉ. राममनोहर लोहिया ने 'पंद्रह आना बनाम तीन आना' की आय का सवाल उठाया था। सरकार की ओर से कहा गया था कि देश की प्रति व्यक्ति प्रतिदिन आय पंद्रह आना है, तब डॉ. लोहिया ने सरकारी आंकड़े देते हुए बताया था कि देश का नागरिक तीन आना प्रतिदिन पर गुज़र-बसर करने के लिए बाध्य है। पर तब की सरकार के मुखिया ने इसे मजाक में उड़ाने की कोशिश नहीं की थी। दुर्भाग्य से आज हमारी संसद में शोर-शराबे में समय अधिक व्यय होता है। कभी-कभार ही कोई गम्भीर बहस होती दिखाई देती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर विपक्ष की आलोचना का उत्तर देते हुए कई बार जवाहरलाल नेहरू को उद्धृत किया है। देश के पहले प्रधानमंत्री ने संसदीय जनतंत्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए, 'काम के प्रति निष्ठा, सहयोग-सहकार की आवश्यकता, स्वानुशासन और संयम बरतने की महत्ता' की बात कही थी। नेहरू से राजनीतिक विरोध हो सकता है पर उनके इस कथन की उपयोगिता और उपयुक्तता के बारे में संदेह नहीं किया जाना चाहिए।

सरकार के पास बहुमत है, अतः धन्यवाद प्रस्ताव तो पारित होना ही होता है। पर निस्संदेह यह एक ऐसा अवसर होता है जब हमारे सांसद, सत्तारूढ़ पक्ष और विपक्ष दोनों, दलगत राजनीति से ऊपर उठकर गम्भीर चिंतन-मनन कर सकते हैं। पर, दुर्भाग्य से, अक्सर ऐसा होता नहीं। अक्सर अनावश्यक आरोप-प्रत्यारोप बहस पर हावी हो जाते हैं। इस मौके पर जिस गम्भीरता की आवश्यकता होती है, अक्सर उसका अभाव दिखता-खलता है। उस दिन लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर बहस के दौरान एक स्थिति तो ऐसी भी आयी जब कोरम का खतरा उत्पन्न हो गया था। यह चिंता की बात है। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई बहस को विपक्ष और सत्तारूढ़ पक्ष दोनों को गम्भीरता से लेना होगा। सत्तारूढ़ पक्ष को यह तो दिख गया कि 'दो भारत' की बात उठाने वाला प्रधानमंत्री के उत्तर को सुनने के लिए उपस्थित नहीं था।

हताशा का आत्मघात

देश की संसद में सरकार द्वारा पेश किया गया यह आंकड़ा विचलित करता है कि पिछले तीन सालों में बेरोजगारी व कर्ज के चलते 26 हजार लोगों ने मौत को गले लगा लिया। निस्संदेह, यह महज सरकारी आंकड़ा है लेकिन इस समस्या के मूल में जाने की जरूरत है। यूं तो बेरोजगारी हमारी अर्थव्यवस्था का सनातन संकट है लेकिन कोरोना महामारी ने इस संकट में ईंधन का काम किया है। विपक्ष लगातार बेरोजगारी के संकट के लिए सरकार की घेराबंदी करता रहा है। आरोप है कि देश में बेरोजगारी का आंकड़ा पिछले पांच दशक में सर्वाधिक है। पिछले दिनों बजट सत्र में चर्चा के दौरान राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो यानी एनसीआरबी के आंकड़ों का हवाला देते हुए गृह राज्य मंत्री ने राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित जवाब में जानकारी दी थी कि बेरोजगारी व कर्ज के चलते तीन साल में 26 हजार लोगों ने आत्महत्या कर ली। यहां तक कि महामारी के पहले वर्ष २०२० में बेरोजगारों की आत्महत्या का आंकड़ा तीन हजार पार चला गया। इस दौरान बेरोजगारी के चलते 3,548 लोगों ने आत्महत्या की। जबकि वर्ष २०१९ में 2,851 और २०१८ में 2,741 लोगों ने बेरोजगारी के कारण आत्महत्या कर ली। वहीं दूसरी ओर, सरकार ने बताया कि वर्ष २०१८ से २०२० के बीच 16,००० से अधिक लोगों ने दिवालियेपन या कर्ज में डूबने के कारण आत्महत्या की। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय के अनुसार, वर्ष २०२० में 5,213 लोगों, २०१९ में 5,9०8 और २०१8 में 4,97० लोगों ने आत्महत्या कर ली। निस्संदेह, बेरोजगारी और आर्थिक संकट के चलते आत्महत्या करने के आंकड़े का बढ़ना समाज विज्ञानियों के लिये चिंता का विषय होना चाहिए। यही वजह है कि विपक्ष लगातार इस मुद्दे पर सरकार पर हमले करता रहा है। वहीं दूसरी ओर, राजग सरकार के कार्यकाल २०१४-२०२० के बीच बेरोजगारों के खुदकुशी के 18,772 मामले दर्ज किये गये, जो हर साल औसतन ढाई हजार से अधिक बैठते हैं।

कमोबेश ऐसी ही स्थिति यूपीए सरकार के दौरान सात साल के आंकड़ों में सामने आती है। बताया जाता है कि वर्ष २००७ से २०१३ के बीच बेरोजगारी के कारण आत्महत्या करने के 15,322 मामले प्रकाश में आये थे। इस दौरान हर साल आत्महत्या का औसतन आंकड़ा दो हजार से अधिक ही था। हालांकि लोकसभा में राहुल गांधी बेरोजगारी का मुद्दा लगातार उठाते रहते हैं। उनकी दलील है कि वर्तमान में बेरोजगारी की दर पिछले पचास सालों में सर्वाधिक है। वहीं कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने लोकसभा में कहा था कि देश में मौजूदा बेरोजगारी की दर बांग्लादेश की तुलना में तेजी से बढ़ी है। बहरहाल, देश में बढ़ता बेरोजगारी संकट एक बड़े संकट की आहट की तरह भी है जो कालांतर में सामाजिक असंतोष का वाहक बन सकता है। सार्वजनिक मंचों से लगातार कहा जाता रहा है कि भारत युवाओं का देश है, लेकिन नीति-नियंताओं से सवाल किया जाना चाहिए कि हम ऐसा कारगर तंत्र क्यों विकसित नहीं कर पाये हैं जो हर हाथ को काम दे सके। निस्संदेह, हमारी शिक्षा प्रणाली में भी खोट है, जो बाबू तो बनाती है लेकिन कामकाजी हुनर के मामले में दुनिया से पीछे है। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, राजनीतिक विद्रूपता तथा बढ़ती जनसंख्या जैसे कई कारक बढ़ती बेरोजगारी के मूल में हैं, लेकिन देश को इस संकट से उबारना सरकारों का प्राथमिक दायित्व होना चाहिए। हर चुनाव आने पर लाखों-करोड़ों नौकरी देने का वादा तो जोर-शोर से सामने आता है, लेकिन चुनाव के बाद पांच साल तक मुद्दा ठंडे बस्ते में चला जाता है। देश की युवा आबादी को काम देने के लिये वैकल्पिक रोजगार के उपायों पर ठोस काम होना चाहिए। ये घोषणाएं महज सस्ती लोकप्रियता पाने व राजनीतिक लाभ उठाने का जरिया न बनें। यदि समय रहते इस संकट को गंभीरता से संबोधित नहीं किया जाता है तो बेरोजगारी व दिवालिया होने पर आत्महत्या करने वालों का आंकड़ा और बढ़ सकता है, जो देश के लिये अच्छी स्थिति कदापि नहीं कही जा सकती। देश में बेरोजगारी दूर करने के लिये युद्धस्तर पर अभियान चलाने की जरूरत है। (आरएनएस)

मसूरी सीट से कांग्रेस प्रत्याशी गोदावरी थापली ने किया मतदान।

प्लॉट पर कब्जे का आरोप, मुकदमा दर्ज

देहरादून (संवाददाता)। प्लाट पर कब्जा करने का आरोप लगाते हुए एक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार लोहिया नगर गाजियाबाद निवासी विन्देश गर्ग ने बसंत विहार थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसका इंजीनियर्स इन्क्लेव में प्लॉट है। महिला ने बताया कि पल्लवपुरम मेरठ निवासी नीरज बंसल द्वारा उसके प्लॉट की बाउड्रीवाल को क्षतिग्रस्त कर वहां पर मलबा डालकर कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

शराब के साथ महिला गिरफ्तार

देहरादून (संवाददाता)। पुलिस ने शराब के साथ महिला को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोतवाली पुलिस ने मद्रासी कालोनी के पास एक महिला को संदिग्ध अवस्था में घुमते हुए देखा तो उसको रोककर उसकी तलाशी ली तो पुलिस ने उसके कब्जे से 120 पव्वे शराब के बरामद कर लिये। पूछताछ में उसने अपना नाम गीता पत्नी राजकुमार बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

चरस के साथ एक गिरफ्तार

देहरादून (संवाददता)। पुलिस ने चरस के साथ एक को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रेमनगर थाना पुलिस ने चैकिंग के दौरान बिधौली के पास एक एक्टिवा सवार को रूकने का इशारा किया तो वह पुलिस को देख भाग खडा हुआ। पुलिस ने पीछा कर उसको थोडी दूरी पर दबोच लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने उसके कब्जे से 75 ग्राम चरस बरामद कर ली। पूछताछ मे उसने अपना नाम अफजल उर्फ राज पुत्र गुलजार निवासी कारगी चौक बद्रीनाथ मन्दिर के पास बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

मतदाताओं ने किया 632 प्रत्याशियों के...

▶▶ पृष्ठ 1 का शेष

तीन बजे तक राज्य में औसतन 49 फीसदी लोगों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया था राजधानी दून में 3 बजे तक 48.89 फीसदी तथा चकराता में 60 फीसदी, बागेश्वर में 46.64 फीसदी अल्मोड़ा में 44.62 फीसदी विकास नगर में 56.30 फीसदी, उधम सिंह नगर में 55 फीसदी मतदान की खबरें हैं। आखिरी दौर में मतदान में आई तेजी से औसत मतदान की उम्मीद की जा सकती है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

म्यूजिक थेरेपी: संगीत में झूमकर भी स्वास्थ्य को मिल सकते हैं कई फायदे

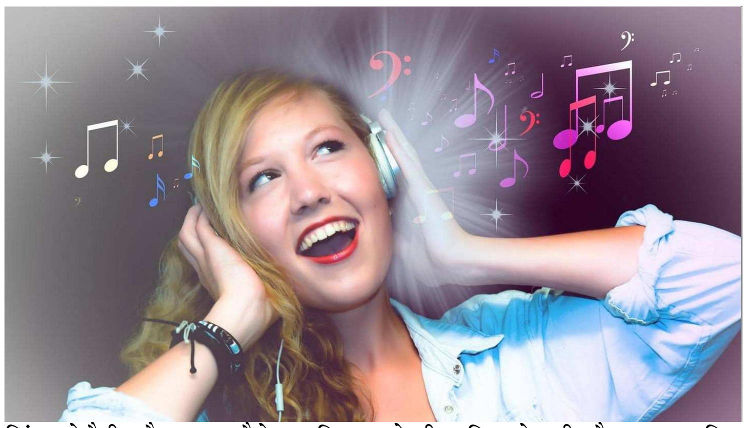

म्यूजिक यानी संगीत, जो हमारी जिंदगी का एक जरूरी हिस्सा बन गया है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि म्यूजिक एक थेरेपी की तरह काम करके कई तरह के स्वास्थ्य लाभ देने में मदद कर सकता है। जी हां, म्यूजिक की मदद से कई तरह के मानसिक विकारों से राहत दिलाने से लेकर शारीरिक विकास बेहतर तरीके से हो सकता है। आइए आज हम आपको विस्तार से बताते हैं कि म्यूजिक थेरेपी से क्या-क्या फायदे मिल सकते हैं।

अगर आप रोजाना कुछ मिनट ही लाइट म्यूजिक सुनते हैं तो इससे हृदय के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त, यह श्वसन में सुधार करने, रक्तचाप को नियंत्रित करने और मांसपेशियों को आराम देने में भी मदद कर सकता है। इसके साथ ही सिरदर्द से राहत दिलाने में भी म्यूजिक थेरेपी मदद कर सकती है क्योंकि इसका उद्देश्य दर्द से ध्यान हटाना है और उसे दूर करना है।

अल्जाइमर रोगियों के इलाज के लिए भी म्यूजिक थेरेपी का इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि इसका दिमाग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और अल्जाइमर एक मानसिक रोग है। इसके अतिरिक्त, यह चिंता, बेचैनी और तनाव जैसे मानसिक विकारों से छुटकारा दिलाने में भी कारगर है। इसके साथ ही व्यक्ति को आराम पहुंचाने और मन को खुश रखने में भी म्यूजिक थेरेपी काफी मदद कर सकती है। हालांकि, इन सभी लाभों के लिए गाने का सही चयन होना महत्वपूर्ण है।

शारीरिक और मानसिक लाभ के साथ-साथ म्यूजिक थेरेपी में आध्यात्मिक अनुभवों को बढ़ाने की शक्ति है और इससे अन्य लोगों से जुड़ने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, यह खुद पर नियंत्रण की भावना पैदा करने में मदद करती है और मनोभ्रंश के प्रभाव को कम करने में भी मदद करती है। वहीं, मनोरंजन के हिसाब से भी म्यूजिक बेहतरीन है। शायद इसलिए हर पार्टी और जश्न का मजा इसके बिना अधूरा सा है।

जो व्यक्ति शारीरिक दर्द से राहत पाना चाहता है, उसके लिए म्यूजिक थेरेपी बेहतरीन है। वहीं, तनाव जैसे मानसिक विकारों से छुटकारा दिलाने में भी म्यूजिक थेरेपी मदद कर सकती है। ऑटिज्म और अल्जाइमर के रोगियों के लिए म्यूजिक थेरेपी लेना फायदेमंद साबित हो सकता है। हृदय और मधुमेह रोगी भी इसका विकल्प चुन सकते हैं। आर्मी के दिग्गज, जिन्होंने मौत और युद्धों का अनुभव किया हो, वे खुद को शांत करने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। (आरएनएस)

कार्तिक आर्यन की भूल भुलैया 2, 20 मई को सिनेमाघरों में आएगी

कोरोना वायरस की तीसरी लहर के कारण कई फिल्मों की रिलीज डेट आगे बढ़ी है। अब इस सूची में कार्तिक आर्यन की फिल्म भूल भुलैया 2 का नाम भी शामिल हो गया है। पहले यह फिल्म इस साल 25 मार्च को रिलीज होने वाली थी। अब मेकर्स ने नई रिलीज डेट घोषित कर दी है। कार्तिक की भूल भुलैया 2 20 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अनीस बाज्मी ने इस फिल्म का निर्देशन किया है।

फिल्म समीक्षक तरण आदर्श ने अपने ट्विटर हैंडल पर जानकारी शेयर की है। उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा, फिल्म भूल भुलैया 2 जो इस साल 25 मार्च को रिलीज होने वाली थी, अब यह फिल्म एक नई डेट 20 मई, 2022 को सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली है। इस फिल्म में कार्तिक, कियारा आडवाणी और तब्बू नजर आएंगे। पहले ऐसी खबरें आई थीं कि मेकर्स 25 मार्च को फिल्म रिलीज करने पर अडिग हैं।

भूल भुलैया 2 का रानी मुखर्जी की फिल्म मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे से टक्कर होने वाला है। मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे भी 20 मई को ही सिनेमाघरों में रिलीज होगी। रानी ने बताया था कि उनकी यह फिल्म महिला केंद्रित है। फिल्म का निर्देशन आशिमा छिब्बर ने किया है। अजय देवगन की मैदान से भी भूल भुलैया 2 की भिड़ंत होगी। स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म मैदान भी 20 मई को ही दर्शकों के बीच दस्तक देगी।

भूल भुलैया 2 2007 में आई कॉमेडी फिल्म भूल भुलैया का सीक्वल है। इसमें अक्षय कुमार की जगह कार्तिक आर्यन ने ली है। विद्या बालन, राजपाल यादव और अमर उपाध्याय भी दिखेंगे। फिल्म के निर्देशन की कमान इस बार प्रियदर्शन की जगह अनीस संभाल रहे हैं। इसे भूषण कुमार और मुराद खेतानी मिलकर बना रहे हैं। भूल भुलैया 2 पिछले साल 20 जुलाई को रिलीज होने वाली थी, लेकिन कोरोना के कारण इसे टाल दिया गया था।

यदि भूल भुलैया 2 25 मार्च को रिलीज होती, तो इसका क्लैश पैन इंडिया फिल्म आरआरआर से होने वाला था। मेगाबजट में बनी आरआरआर भी बहुप्रतीक्षित फिल्मों में शामिल है। फिल्म का निर्देशन एसएस राजामौली ने किया है।

शब्द सामर्थ्य -122

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :
1. लज्जत, जायका 2. मुकाबला, भेंट, होड़ 5. बंदी, कैद की सजा पाने वाला व्यक्ति 7. खल-पात्र, नाटक फिल्म आदि का बुरा पात्र 9. कामी, व्याभिचारी 10. इज्जत जाना, बेइज्जती होना (उपमा)11. ऊटपटांग, विचित्र, कठिन 13. वैभव, ठाट-बाट 14. साथ, सहित 15. कामदेव की पत्नी, प्रेम 16. मैं का बहुवचन 17. दरवाजे-दरवाजे 20. एक राशि, मगर 22. नमी, सीड़, मुहर, ठप्पा 23. औषधालय, चिकित्सालय।

ऊपर से नीचे
1. आत्मनिर्भर, स्वालंबन भावना से युक्त, स्वाश्रित 2. वर्ष, बरस 3. राजी करना, रूठे हुए को खुश करना, प्रसन्न करना 4. नाटक फिल्म आदि का मुख्यपात्र 6. दीवानगी, पागलपन, 7. दो वस्तुओं के टकराने से उत्पन्न ध्वनि, बैर-विरोध, अनबन 8. खीरे की प्रजाति का एक फल 11. बेवकूफ, मूर्ख 12. बादल, मेघ 13. बहुत चालाक, होशियार 14. जिसका मत दूसरे से मिलता हो, 15. दांत, दंत 18. प्राप्ति, वस्तु आदि मिलने का प्रमाण पत्र 19. दंगा-फसाद, उपद्रव विप्लव 21. बचाव, सुरक्षा।

1		2	2	3	4	3	5	6
		7				8		
9			8	10				
	10				11	12	13	
14	11		12				13	
14					20	15		
16			17	18	19			24
20		21		22			26	21
				23				

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 121 का हल

ग	ल	त	ज्ञ			खा	म	खाँ
णे		ल		झ	प	की		
श	र	ब	त	10	रं			मि
	ज	गा	ना		प	रा	का	ष्ठा
14	नी	र		वि	रा	ज	मा	न
ना	च		18	प	20		य	
म	र	णा	स	न्न		पा	नी	24
ची	25		प		पा		26	भो
न	ज	रा	ना		स	मा	चा	र

श्रेया बंसल ने किया पहली बार मतदान।

तानिया श्रॉफ के आगे फेल है बॉलीवुड एक्ट्रेस

बॉलीवुड अभिनेता सुनील शेट्टी के बेटे अहान शेट्टी, जिन्होंने हाल ही में बहुप्रतीक्षित फिल्म तड़प के माध्यम से अभिनय की शुरुआत की, को फिल्म में उनके प्रदर्शन के लिए प्रशंसा मिल रही है। फिल्म के निर्देशक मिलन लुथरिया हैं और अहान तारा सुतारिया के साथ काम करते हैं, जिन्होंने स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2 से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की। तड़प 2018 की तेलुगु फिल्म आरएक्स 100 का हिंदी रीमेक है। अहान ने बॉलीवुड में ऐसे समय में डेब्यू किया है, जब नेपोटिज्म के कॉन्सेप्ट ने आग पकड़ ली है। स्टार किड्स को उनके प्रदर्शन के लिए ट्रोल किया जा रहा है, और लोग उन्हें भाई-भतीजावाद का उत्पाद कह रहे हैं, लेकिन इस नवोदित कलाकार ने अपने प्रदर्शन से सभी का मुंह बंद कर दिया।

फिल्म में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के अलावा, उनकी प्रेमिका तानिया श्रॉफ के साथ उनके रिश्ते को हम बी-टाउन में टॉक ऑफ द टाउन कहते हैं। आइए आपको अहान और तानिया के रिश्ते के बारे में कुछ रोचक जानकारियों से रूबरू कराते हैं।

ऐसा कम ही होता है जब करियर की शुरुआत से पहले ही कोई नवागंतुक निजी संबंधों के लिए सुर्खियों में आ गया हो। डेटिंग की अफवाहों पर ज्यादातर एक्टर्स बयान देते हैं कि उनका फोकस सिर्फ काम पर है, अहान-तानिया का रिश्ता काफी मैच्योर लगता है।

तानिया का जन्म 29 मार्च 1997 को मुंबई, महाराष्ट्र में जयदेव श्रॉफ और रोमिला श्रॉफ के घर हुआ था। उनके पिता एक जाने-माने उद्योगपति हैं। वह यूपीए लिमिटेड के वैश्विक सीईओ हैं। तानिया का एक छोटा भाई भी है जिसका नाम वरुण है। वह पेशे से मॉडल और फैशन डिजाइनर हैं। जब वह सिर्फ 7 साल की थीं, तब उनके माता-पिता अलग हो गए थे।

तानिया अपने कमाल के फैशन सेंस के लिए जानी जाती हैं और कई बार कई मैगजीन के कवर पेज पर छाई रहती हैं। उसने विभिन्न फैशन ब्रांडों के लिए कई विज्ञापन किए। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अमेरिकन कॉलेज ऑफ़ बॉम्बे में की और लंदन कॉलेज ऑफ़ फैशन से फैशन डिजाइनिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

ईशा कोप्पिकर इस वैलेंटाइन डे पर सेल्फ लव को प्राथमिकता देंगी

अभिनेत्री ईशा कोप्पिकर नारंग इस वेलेंटाइन डे पर अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर सेल्फ लव में व्यस्त रहेंगी। वह कहती हैं कि यह एक बड़ी प्राथमिकता है। ईशा ने कहा, सेल्फ लव एक बहुत बड़ी प्राथमिकता है और यह वैलेंटाइन है, मैं वही करने जा रही हूं। मेरे पास देखभाल करने के लिए बहुत सी चीजें और लोग हैं। अगर मैं अपने सर्वश्रेष्ठ में नहीं हूं और खुद की परवाह नहीं करती, तो मैं उन लोगों की मदद नहीं कर पाऊंगा जिनके लिए मैं जवाबदेह हूं।

उन्होंने कहा, किसी को पहले खुद से प्यार करने और जश्न मनाने की जरूरत है। हम हमेशा दूसरों की परवाह करते हैं लेकिन हम जिस चीज की उपेक्षा करते हैं, वह है अपनी भलाई की देखभाल करना। कोई और नहीं है जिस पर हमें निर्भर रहना चाहिए।

कृष्णा कॉटेज और एक विवाह ऐसा भी जैसी फिल्मों में काम कर चुकीं अभिनेत्री का कहना है कि वह कुछ डिटॉक्स करने की कोशिश करेंगी और अपनी ऊर्जा को फिर से जीवंत और थोड़ा प्रतिबिंबित करेंगी।

उन्होंने कहा, केवल स्वयं के साथ रहना और स्वयं को क्षमा करने के लिए समय बिताना आत्म प्रेम का एक रूप हो सकता है। आइए समुदाय की देखभाल करें लेकिन पहले, हमें पूरी तरह से ठीक होना चाहिए। (आरएनएस)

17 फरवरी को रिलीज होगी यामी गौतम की फिल्म ए थर्सडे

अभिनेत्री यामी गौतम आने वाले दिनों में एक से बढ़कर एक फिल्मों में नजर आएंगी। ए थर्सडे भी उनकी आने वाली बहुचर्चित फिल्मों में शुमार है। उनकी इस फिल्म से जुड़ीं कई जानकारियां सामने आ चुकी हैं। अब इसकी रिलीज डेट भी सामने आ गई है, जिसके बाद यामी के प्रशंसकों की खुशी का ठिकाना नहीं है। जल्द ही इस फिल्म का प्रमोशन शुरू होगा।

फिल्म से जुड़े सूत्र ने बताया कि निर्माताओं ने ए थर्सडे की रिलीज डेट फाइनल कर दी है। यह 17 फरवरी को दर्शकों के बीच आएगी। फिल्म डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज होगी। अगले हफ्ते से फिल्म के प्रमोशन का काम शुरू होगा। इस फिल्म में डिंपल कपाड़िया और नेहा धूपिया भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराएंगी। रॉनी स्क्रूवाला इस फिल्म के निर्माता हैं। फिल्म का निर्देशन ब्लैंक के निर्देशक बहजाद खांबटा ने किया है।

इस फिल्म की कहानी नैना जायसवाल नाम की एक प्लेस्कूल टीचर के ईर्द-गिर्द घूमती है, जो 16 बच्चों को बंधक बना लेती है। मीडिया और पुलिस नैना को घेर लेती है और उससे सवाल पूछ पूछकर उसे तोड़ देती है। अब नैना को बच्चे कैसे मिलते हैं और क्या उसी ने ही उन्हें अगवा किया है? इन्हीं सवालों का जवाब यह फिल्म आपको देगी। यामी अपने करियर में पहली बार किसी फिल्म में नकारात्मक भूमिका निभाने जा रही हैं।

यामी को आखिरी बार हॉरर कॉमेडी फिल्म भूत पुलिस में देखा गया था। खास बात यह है कि उनकी ये फिल्म भी डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज हुई थी। फिल्म में यामी के साथ जैकलीन फर्नांडिस, सैफ अली खान और अर्जुन कपूर नजर आए थे।

यामी ने हमेशा पर्दे पर कुछ रोमांचक किरदार निभाने की कोशिश की है। वह आगे भी ऐसा ही करती नजर आएंगी। दर्शक उन्हें आने वाले वक्त में फिल्मों में अलग-अलग तरह के रोल निभाते देखेंगे। दर्शक फिल्मों में यामी को एक दिलचस्प साइकोलॉजिकल थ्रिलर से लेकर सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण मुद्दों पर आवाज उठाते हुए देखेंगे। उम्मीद है कि वह अपने इन खास किरदारों के जरिए समाज में एक नई तरह की बहस और चर्चाओं को जन्म देंगी।

यामी जल्द ही पिंक के निर्देशक अनिरुद्ध रॉय चौधरी की फिल्म लॉस्ट में नजर आएंगी। इसमें वह क्राइम रिपोर्टर की भूमिका निभाएंगी। वह अभिषेक बच्चन और अभिनेत्री निमरत कौर के साथ फिल्म दसवीं में भी काम कर रही हैं। इस फिल्म में यामी एजुकेशन सिस्टम पर बात करती दिखेंगी। सोशल ड्रामा फिल्म यामी ओह माय गॉड 2 भी उनके खाते से जुड़ी है। चोर निकल के भागा और रात बाकी जैसी फिल्मों में भी वह अपनी मौजूदगी दर्ज कराएंगी। (आरएनएस)

सयानी गुप्ता ने कोलकाता में की हैशटैग होमकमिंग की शूटिंग

इनसाइड एज और फोर मोर शॉट्स प्लीज जैसी श्रृंखलाओं में अपनी भूमिकाओं के लिए लोकप्रिय अभिनेत्री सयानी गुप्ता अपने गृहनगर कोलकाता पर आधारित हैशटैग होमकमिंग में दिखाई देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। सयानी ने अपने गृहनगर में अपनी पहली प्रमुख फीचर फिल्म की शूटिंग की है।

सयानी कहती हैं कि कोलकाता मेरा घर है, यह वास्तव में दुनिया में मेरा पसंदीदा शहर है। अपना अधिकांश जीवन शहर में बिताने के बाद, यहां शूटिंग करने और काम के संबंध में अपनी जड़ों के करीब होने का अवसर मिलना पूरी तरह से एक बेहतरीन एहसास है। तकनीकी रूप से यह मेरी पहली फिल्म है जिसमें मेरी एक उचित भूमिका है, यह वास्तव में मजेदार लगा, जब आप अपनी भाषा के बारे में बात कर रहे हों या न केवल जब आप सभी के साथ सेट पर अभिनय कर रहे हों, यह बहुत आरामदायक था। अभिनेत्री का कहना है कि उन्हें बांग्ला संवाद बोलना पसंद है। मैं वास्तव में थोड़ा नर्वस थी, क्योंकि मैं बांग्ला बोलती हूं, लोगों को यह नहीं सोचना चाहिए कि बांग्ला अलग है, जब आप बाहर रहते हैं तो थोड़ी सी ट्वींग आती है, मुझे नहीं लगता कि मेरे पास वह है। मैंने कभी बांग्ला संवाद नहीं किया है मेरे जीवन में जब से मैंने बांग्ला में बहुत अधिक थिएटर के साथ पेशेवर रूप से काम करना शुरू किया, तो बांग्ला में फिल्म करने में बहुत मजा आया। यह काफी असली था, काफी सुंदर था और मुझे कोलकाता में शूटिंग करना पसंद है, क्योंकि यह बहुत मजेदार है, खाना बहुत अच्छा है और मुझे अपनी माँ को बहुत बार देखने को मिलता है। मैंने कोलकाता में कुछ परियोजनाओं की शूटिंग की है लेकिन हैशटैग होमकमिंग एक लंबा समय था और वहां शूटिंग करना एक अद्भुत अनुभव था। हैशटैग होमकमिंग में तुषार पांडे, प्लाबिता बोरठाकुर और सोहम मजूमदार भी हैं। सौम्यजीत मजूमदार द्वारा निर्देशित, लिखित और निर्मित, फिल्म का संगीत सोनी म्यूजिक के साथ रहेगा और यह जल्द ही सोनी लिव पर स्ट्रीम होगी।

कॉमेडी फिल्म में वरुण के साथ बनने वाली है पलक तिवारी की जोड़ी?

श्वेता तिवारी की बेटी पलक ने भले ही अभी बॉलीवुड में एंट्री नहीं की है, लेकिन वह आए दिन किसी ना किसी वजह से सुर्खियों में रहती हैं। काफी समय से पलक के बॉलीवुड डेब्यू की चर्चा हो रही है। अब सुनने में आ रहा है कि वह वरुण धवन के साथ बतौर लीड एक्ट्रेस बॉलीवुड में अपनी पारी शुरू करने वाली हैं। फिल्म से जुड़ीं कुछ अहम जानकारियां सामने आई हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, वरुण के पिता डेविड धवन ने एक कॉमेडी फिल्म के लिए पलक से संपर्क किया है। डेविड इस फिल्म में वरुण के साथ पलक को कास्ट करना चाहते हैं। वह इस जोड़ी का रोमांस फिल्म में भुनाने को बेताब हैं। उन्हें पूरा यकीन है कि दोनों की जोड़ी स्क्रीन पर धमाल मचाएगी। डेविड अपनी किसी भी पुरानी हिट फिल्म का रीमेक नहीं बना रहे हैं, बल्कि वह एक नई कहानी दर्शकों के लिए लेकर आएंगे।

वरुण पहली बार फिल्म मैं तेरा हीरो के लिए 2014 में अपने पिता डेविड धवन के साथ साथ आए थे। इसके बाद दोनों ने फिल्म जुड़वां 2 में साथ काम किया। अब बाप-बेटे की यह जोड़ी तीसरी बार साथ काम करने के लिए तैयार है।

वरुण और पलक एक विज्ञापन में भी साथ दिखेंगे। हाल में ही विज्ञापन शूट से दोनों का वीडियो सामने आया है, जिसमें वे जबरदस्त डांस करते नजर आ रहे हैं। उनके फैन क्लबों ने इस वीडियो को शेयर किया है। दोनों साथ में डांस कर रहे हैं और उनके पीछे कई बैकग्राउंड डांसर नजर आ रहे हैं। उन्हें एक कोरियोग्राफर गाइड भी कर रहे हैं। फिलहाल यह पता नहीं चल पाया है कि यह किस विज्ञापन से जुड़ा वीडियो है?

पंजाबी सिंगर और एक्टर हार्डी संधु के गाने बिजली से पलक की लोकप्रियता में जबरदस्त इजाफा हुआ है। यह गाना आजकल सबकी जुबां पर है। म्यूजिक वीडियो से पलक काफी लोकप्रिय हो गई हैं। उनका अंदाज दर्शकों को बेहद पसंद आया है। इसके हिट होते ही पलक के पास कई बॉलीवुड फिल्मों के प्रस्ताव आ चुके हैं। सोशल मीडिया पर पलक के लाखों फॉलोअर्स हैं। उनकी तस्वीरें और डांस वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल होते हैं। वरुण जल्द ही फिल्म भेड़िया में भी नजर आएंगे। इसमें अभिनेत्री कृति सैनन के साथ उनकी जोड़ी बनी है। इसके अलावा वह फिल्म जुग जुग जियो में अपनी मौजूदगी दर्ज कराएंगे। इस फिल्म में अभिनेत्री कियारा आडवाणी उनकी जोड़ीदार बनी हैं। फिल्म इक्कीस भी वरुण के खाते से जुड़ी है। नितेश तिवारी की एक रोमांटिक फिल्म में भी वरुण अपनी मौजूदगी दर्ज कराएंगे। सिटाडेल के हिंदी वर्जन में भी वरुण अपनी मौजूदगी दर्ज कराएंगे। (आरएनएस)

दिग्गजों को नहीं भा रहा कांग्रेस का घर-घर चलो अभियान

अरुण पटेल

रस्सी जल गई लेकिन बल नहीं गए की तर्ज पर कहा जा सकता है कि पूरे देश की तरह मध्यप्रदेश में भी कांग्रेस पार्टी गुटबंदी के दलदल से उबरती नजर आने के स्थान पर उसमें और गहरे तक धंसती नजर आ रही है। मध्यप्रदेश में 2018 के विधानसभा के चुनाव में किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था। सीटों के लिहाज से सबसे बड़े राजनीतिक दल के तौर पर कांग्रेस को सरकार बनाने का मौका मिला था। लेकिन अपने अंतर्विरोधों के चलते ही पंद्रह माह में कमलनाथ सरकार गिर गई। इसका कारण गुटबंदी और कुछ नेताओं का अपना अहं भी था और उसके कारण जो असंतोष पैदा हो रहा था उसकी परिणिति अंततः कमलनाथ सरकार के गिर जाने में हुई। इसके बाद भी पार्टी में गुटबाजी थमती दिखाई नहीं दे रही है। पूर्व मुख्यमंत्री और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ द्वारा 1 फरवरी से शुरू किए गए %घर चलो, घर-घर चलो अभियान % से पार्टी के बड़े नेताओं की दूरी नेताओं के बढ़े हुए अहं को जाहिर करने वाली है। इससे लगता है कि दिग्गजों को यह अभियान नहीं भा रहा है। मध्य प्रदेश में विधानसभा के चुनाव अगले साल के आखिर में होना है और लगता है कि शायद अभी भी गुटबंदी से पीछा छुड़ाने के स्थान पर नेताओं की अपने निजी महत्वाकांक्षाएं उन पर ज्यादा हावी हैं। इसमें दो राय नहीं हो सकती है कि गुटबाजी के चलते ही पंद्रह साल सत्ता से बाहर रही कांग्रेस 15 माह में ही अपनी सरकार गवां बैठी थी। यदि यह कहा जाए कि राष्ट्रीय फलक पर राजनीतिक दलों में कांग्रेस अकेली ऐसी पार्टी है, जिसमें हर स्तर पर इस कदर गुटबाजी को देखा जा सकता है। गुटबाजी के कारण ही पूर्व में कई दिग्गज नेताओं ने कांग्रेस को छोड़कर अपनी अलग पार्टी बनाई। शरद पवार और ममता बनर्जी का नाम इनमें प्रमुख है। अर्जुन सिंह और माधवराव सिंधिया जैसे बड़े नेता भी कांग्रेस पार्टी छोड़ने के लिए मजबूर हुए थे। हालांकि माधवराव सिंधिया ने अपनी पार्टी मध्य प्रदेश विकास कांग्रेस बनाई थी और किसी स्थापित राजनीतिक दल में नहीं गए थे तथा बाद में कांग्रेस में लौट आए। अर्जुन सिंह भी कांग्रेस में वापस लौटे। उस समय अविभाजित मध्यप्रदेश था। मध्यप्रदेश कांग्रेस में अर्जुन सिंह और माधवराव सिंधिया की गुट की लड़ाई कई सालों तक चली थी। श्यामाचरण शुक्ल और विद्याचरण शुक्ल का भी अपना गुट रहा है। गुटबाजी के कारण ही कांग्रेस नब्बे के दशक से ही लोकसभा सीटों पर अपनी पकड़ कमजोर करती हुई नजर आई थी। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस केवल एक छिंदवाड़ा की ही सीट जीतने में सफल रही थी। 2019 के लोकसभा चुनाव में गुना में ज्योतिरादित्य सिंधिया की हार में कांग्रेस की गुटबाजी को भी एक बड़ी वजह माना जाता है। मार्च 2020 में सिंधिया भाजपा में शामिल हो गए। इसके बाद यह माना जा रहा था कि पूर्व मुख्यमंत्री द्वय दिग्विजय सिंह और कमलनाथ के बीच आपसी समन्वय में गुटबाजी दिखाई नहीं देगी। परंतु ऐसा आभास मिलता है कि दोनों के बीच आपसी समन्वय कुछ लड़खड़ा रहा है। 2018 के विधानसभा चुनाव में से पहले कांग्रेस पंद्रह साल प्रदेश में सत्ता से बाहर रही। इसकी वजह केवल क्षत्रपों का अहं रहा।

कमलनाथ एक साथ दो महत्वपूर्ण पदों पर हैं। प्रदेश अध्यक्ष और विधायक दल के नेता का पद उनके पास है। कमलनाथ को वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाया था। विधायक दल के नेता का पद उन्होंने सरकार गिर जाने के बाद भी नहीं छोड़ा। दिग्विजय सिंह इस पद पर अपने समर्थक को बैठाना चाहते थे। कमलनाथ प्रदेश कांग्रेस की राजनीति में प्रमुख पदों का बंटवारा करने के पक्ष में दिखाई नहीं दे रहे हैं। कांग्रेस के महत्वपूर्ण पदों पर वे धीरे-धीरे अपने समर्थकों को बैठाते जा रहे हैं। 1 फरवरी को देवास में घर चलो, घर घर चलो अभियान की शुरुआत जब कमलनाथ ने की तो उस समय वही अधिकांश चेहरे नजर आए जो कमलनाथ के निजी समर्थक हैं। आजकल कांग्रेस के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भी बड़े नेता नजर नहीं आ रहे हैं। राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे अजय सिंह जरूर अपने प्रभाव वाले इलाके में इस अभियान के पहले से ही सक्रिय हैं और दिसंबर से ही उन्होंने घर वापसी अभियान छेड़ दिया था और भाजपा के अनेक लोगों को कांग्रेस में शामिल कराया तथा जो रूठ कर चले गए थे उन्हें भी पार्टी में वापस लाए। लेकिन फिलहाल दिग्विजय सिंह कांतिलाल भूरिया अरुण यादव विवेक तंखा अभी तक इस अभियान से दूरी बनाए हुए हैं। सुरेश पचौरी स्वास्थ्य कारणों से फिलहाल किसी भी कार्यक्रम में भाग लेने की स्थिति में नहीं हैं। इस सिलसिले में प्रदेश कांग्रेस महामंत्री मीडिया के के मिश्रा का कहना है कि पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव कोरोना पॉजिटिव है और कांतिलाल भूरिया अपने क्षेत्र झाबुआ में इस अभियान को चला रहे हैं। दिग्विजय सिंह और विवेक तंखा संसद का सत्र होने के कारण उसमें व्यस्त है और पार्टी में अब किसी भी स्तर पर कोई गटबंदी नहीं है। कांग्रेस प्रवक्ता योगेश यादव कहते हैं कि यह कार्यक्रम 28 फरवरी तक चलना है। हर नेता अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में कांग्रेस की मजबूती के लिए काम करते दिखाई देंगे। अजय सिंह अपने प्रभाव वाले विंध्य क्षेत्र में अलग कांग्रेस में वापसी का अभियान चला रखा है। लेकिन,इस अभियान को पार्टी मान्यता नहीं दे रही। कमलनाथ समर्थक पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा कहते हैं कि पार्टी के दरवाजे उन सभी के लिए खुले हैं,जो दूसरे दल में जाने के बाद भी कांग्रेस पार्टी की विचारधारा से जुड़े रहे। वर्मा ने साफ तौर पर कहा कि पार्टी ने घर वापसी का कोई अभियान शुरू नहीं किया है। इसके बावजूद भी अजय सिंह ने सज्जन सिंह वर्मा के कथन को कोई अहमियत ना देते हुए घर चलो घर चलो अभियान के तहत अपनी सक्रियता विंध्याचल में बना रखी है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष अरुण यादव भी लंबे समय से उपेक्षित चल रहे हैं। वे कई बार सार्वजनिक तौर कमलनाथ के फैसलों पर सवाल भी खड़े कर चुके हैं। खंडवा लोकसभा के उपचुनाव के बाद कमलनाथ ने जिला कांग्रेस कमेटी के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे यादव समर्थकों को हटा दिया था। जाहिर है कि निचले स्तर का कार्यकर्ता अभियान से जुड़ने के लिए अपने- अपने नेता के निर्देश का इंतजार कर रहा है।

2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की पंद्रह साल बाद सत्ता में वापसी हुई थी। इस वापसी में दिग्गज नेताओं की एकजुटता बेहद महत्वपूर्ण रही थी। ज्योतिरादित्य सिंधिया का चेहर स्टार प्रचारक के तौर पर सामने था। दिग्विजय सिंह ने मैदानी कार्यकर्ताओं को एकजुट किया। लेकिन,सरकार बनने के बाद गुटबाजी फिर हावी हो गई। यह तय माना जा रहा है कि विधानसभा का अगला चुनाव कमलनाथ के नेतृत्व में ही लड़ा जाएगा। कमलनाथ की रणनीति भी इसी ओर इशारा कर रही है। शिवराज सिंह चौहान की सरकार और भाजपा के प्रति सबसे अधिक आक्रामक मुद्रा में केवल दिग्विजय सिंह ही नजर आ रहे हैं। अजय सिंह भी अपनी दावेदारी को मजबूत करने में लगे हुए हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सबसे ज्यादा नुकसान विंध्य क्षेत्र में ही हुआ था। अजय सिंह खुद भी विधानसभा का चुनाव हार गए थे। इसके बाद लोकसभा चुनाव में हुई सिंधिया की हार से कमलनाथ का आत्म विश्वास स्वाभाविक तौर बढ़ा। उनके समर्थक लोकप्रिय चेहरा होने का दावा भी कर रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता रहे और अब ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ भाजपा में जाने के बाद उसके प्रवक्ता बने पंकज चतुर्वेदी कमलनाथ की शैली पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि कमलनाथ जी आपके चलो चलो अभियान के चलते ही आप व आपकी पार्टी सड़क पर है। कोई घर ठिकाना बचा नहीं। वैसे भी जनता जनार्दन ने आपको घर बिठा रखा है। अब कौन से घर चलो अभियान की बात आप कर रहे हैं।

सू- दोकू क्र.122

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.121का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

सुरीले सुरों की मूरत के ओझल हो जाने के मायने

उमेश त्रिवेदी

बानवे साल की उम्र में लता मंगेशकर का चले जाना न हैरान करता है, ना ही हतप्रभ करता है। घटनाक्रम ऐसा कुछ नही हैं, जिसका एहसास लोगों को पहले से नहीं था या जिसके लिए लोग मानसिक रूप से तैयार नही थे। नियति का यही तकाजा था, जिसे रोक पाना मेडिकल साईंस के सामर्थ्य से बाहर था। इसके बावजूद उनके चले जाने की खबर को दिमाग आसानी से जब्त नहीं कर पा रहा है। एक अजीबोगरीब गुमसुम चुप्पी हमारे जैसे कई लोगों के जहन में बरबस चस्पा हो गई है।

लता मंगेशकर के हमारे बीच सशरीर मौजूद होने के मायने के भिन्न थे। भले ही अर्से से उनकी आवाज खामोश थी, फिर भी उनकी आवाज की अनुगूंज में एक दिव्य और दैविक ऊर्जा थी, जो जिंदगी की धड़कनों को रवानी देती थी, समय के तकाजों को मुस्कराहटट देती थी। घर-आंगन में जब तक मां की आवाज हरकत मे रहती है, तब तक हर व्यक्ति की जिंदगी चहकती रहती है। सभी जानते है कि मां की आवाज के खामोश हो जाने के बाद आंगन कितने भुतहे और सूने हो जाते हैं? ममत्व और प्यार से सराबोर सुरों की प्रतिमूर्ति लता मंगेशकर का ओझल हो जाना घर-आंगन की रौनक को बियबान में तब्दील करने जैसा ही है। उनके असंख्य मुरीदों के दिलों के हालात भी एक अनचाहे सूनेपन की चपेट मे हैं। लोगो के दिलों मे अनवरत बहने वाले सुरों की निर्झर धारा में यह खलल रास नहीं आ रहा है। मन की गहराइयों में गीतों की स्वर-लहरियों का सिलसिला टूट सा रहा है।

कहा जाता है चौबीस घंटे के समय-चक्र में कोई पल ऐसा नहीं होता है, जब लता मंगेशकर की आवाज खामोश होती हो। दुनिया में कहीं भी, किसी भी कोने मे लता मंगेशकर के गीतों का कोई रिकार्ड अवश्य बज रहा होता है। भारत की आजादी के बाद जन्में ज्यादातर लोगों की अभिव्यक्तियों ने लता मंगेशकर की सुर-लहरियों के सहारे उड़ने भरी हैं। उनींदी आंखो से अनगिन मांओ ने उनकी लोरी को गुनगुनाया है, तो भाई-बहनों ने एक-दूसरे की रक्षा की कसमें खाई है, हरी-भरी वादियों में प्रेमी-जोड़ो ने उनके प्रणय-गीतों के सहारे खुद को अभिव्यक्त किया है, तो आमजनों ने उनके गीतों के माध्यम से वतनपरस्ती का मूल-मंत्र सीखा है। वतन को लोगों ने आंखो मे पानी भरकर शहीदों को याद करने का सबक लता मंगेशकर से ही सीखा है।

जाने-अनजाने लता मंगेशकर अधिकांश भारतीयों की जिंदगी का हिस्सा थीं, जिनके साथ वो आशाओं की परवान चढ़ता था, निराशों से जूझता था, प्रेम-पत्र लिखता था, मां-बेटों के रिश्तों को प्राण देता था, विरह-गीतों को गुनगुनाता था, बादलों को उलाहने देता था, कौओं से अतिथियों का पता पूछता था, प्रणय के पलछिनों में चहकता था, सावन के हिंडोलों पर इतराता था, शादियों मे बाबुल की दुआओं को कबूल करता था।उनकी शख्सियत का कोई भी तकनीकी पहलू अज्ञात नही हैं। लता ने अपनी जिंदगी के सफर में पांच साल रंगमंच किया, साठ सालों तक तीस हजार गीतों के साथ जिंदगी का सफरनामा लिखा और हमसे विदा हो गईं। लता मंगेशकर के जाने के बाद उनके बारे में औपचारिक और अनौपचारिक चर्चाओं का जलजला अथवा तूफान धीरे-धीरे थम जाएगा। जो लोग उन्हें जानते थे या जिन्हे वो जानती थी, उनकी प्रतिक्रियाओं में, बातों में लता मंगेशकर के बखान की औपचारिक परतों की मियाद मीडिया के गलियारों अथवा टीवी स्क्रीन के जरूरतों के हिसाब से छोटी-बड़ी हो सकती है, लेकिन लता मंगेशकर की संगीत-साधना का पक्ष उन्हें शाश्वत बनाता है। चौंसठ कलाओं की व्याख्या में संगीत को सर्वश्रेष्ठ कलाओं में गिना जाता है। इसे श्रेष्ठ इसलिए माना जाता है कि इस विधा में कलाकार और समाज के बीच सीधी संवाद और संप्रेषण होता है। कला और समाज के बीच संगीतमय संप्रेषण को सार्थक और सफल बनाने के लिए अथक साधना की आवश्यकता होती है। शास्त्रों में लिखा है कि चाहे संगीत हो, साहित्य हो, अथवा चित्रकारी, चौंसठ कलाओं में किसी भी कला के सफल सृजन के लिए, कलाकार को मन से पवित्र, विशुध्द,निर्दोष, निस्पृह, निर्लिप्त होना जरूरी है। इन सभी शास्त्रोक्त गुणों ने लता मंगेशकर का मस्ताभिषेक किया था। शायद इसीलिए वो आमजनों के दिलों में धड़कती थी।

किशोर उपाध्याय ने अपनी माताश्री श्रीमती एकादशी उपाध्याय व पत्नी श्रीमती सुमन उपाध्याय के साथ अपने गांव के बूथ पर मतदान किया।

वोटर लिस्ट में नाम ना होने पर मतदाता रहे परेशान

संवाददाता

देहरादून। मतदान के दौरान मतदाता सूची में नाम ना मिलने पर कई लोग परगशान दिखायी दिये तथा वह इधर-उधर बूथों पर अपना नाम तलाशते हुए दिखायी दिये। आज यहां मतदान सुबह आठ बजे से शुरू हो गया था। सुबह मतदान धीमा रहा लेकिन समय के साथ ही मतदान ने तेजी पकड ली। इसी दौरान कई मतदान केन्द्रों पर लोग भटकते हुए दिखायी दिये। उनका कहना था कि पिछली बार उन्होंने मतदान किया था लेकिन इस बार उनका मतदाता सूची में नाम ही नहीं है। यही नहीं किसी का तो पूरे परिवार का नाम ही मतदाता सूची से गायब दिखायी दिया वहीं कई जगह पूरा परिवार मतदान करके आ गया और परिवार के एक सदस्य का नाम ही गायब दिखा तो वह भी यहीं कहता दिखायी दिया कि उसके परिवार का नाम है लेकिन उसका नाम सूची से गायब है। इस तरह की घटना शहर के कई पोलिंग बूथों पर दिखायी दिया।

एसएसपी ने पत्नि संग जाकर किया मतदान

संवाददाता

देहरादून। विधानसभा चुनाव के लिए एसएसपी/डीआईजी ने अपनी पत्नी के संग जाकर मतदान किया।

आज यहां एसएसपी/डीआईजी जन्मेजय खण्डरी द्वारा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती गीतिका खण्डूरी के साथ विधानसभा सामान्य निर्वाचन के अन्तर्गत अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए नवादा स्थित पोलिंग बूथ पर जाकर मतदान किया गया।

3 साल में ही भुला दिया पुलवामा के शहीदों को

संवाददाता

देहरादून। यह अत्यंत ही दुखद है की जब 3 साल पूर्व हुए आतंकी हमले में अपनी जान गवां देने वाले 40 जवानों की शहादत पर पूरा देश आंसू बहा रहा था और नेता उनके पार्थिक शरीरों की परिक्रमा कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे थे, उन्हें न सिर्फ देशवासियों ने और नेताओं ने उनकी इस बड़ी कुर्बानी को 3 साल में ही भुला दिया बल्कि देश के जागरूक मीडिया ने भी उनकी तीसरी बरसी पर उन्हें एक बार भी याद करने की जरूरत नहीं समझी है।

14 फरवरी 2019 को जम्मू कश्मीर के पुलवामा में जैश ए मोहम्मद के आतंकियों द्वारा घात लगाकर सीआरपीएफ की एक बस को अपना निशाना बनाया था। विस्फोट से लदी एक कार सीआरपीएफ के काफिले में घुसी और बस से टकरा गई जिसके बाद हुए विस्फोट में 40 जवानों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। इस वारदात में 70 जवान घायल हुए थे। इस आतंकी हमले से पूरा देश दहल गया था। शोक में डूबे देश के लोग गम और आक्रोश में थे तथा जब इन सभी 40 जवानों के शव दिल्ली लाए गए तो प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री तक तमाम नेताओं को श्रद्धांजलि देते हुए देश ने देखा था।

❑किसी भी नेता ने न याद किया न दी श्रद्धांजलि

जब भी किसी शहीद का शव घर आता है तो हम जोर-जोर से नारे लगाते हैं। उनका नाम लेकर उनकी कुर्बानी को हमेशा याद रखने की बात करते हैं लेकिन आज पुलवामा हमले के 3 साल बीतते-बीतते हम उन्हें कैसे भूल जाते हैं यह आज देखने को मिला। चुनावी दौरों में जुटे नेताओं को एक बार भी इन 40 शहीदों की कुर्बानी न याद आई न किसी ने उन्हें श्रद्धांजलि दी और तो और मीडिया में भी सिर्फ चुनावी कवरेज ही सबसे ऊपर रही और कहीं एक समाचार पढ़ने या देखने को नहीं मिला। जो न सिर्फ दुखद है बल्कि हमारी राष्ट्रीयता व राष्ट्र धर्म पर भी सवाल खड़ा करता हैं जिसके बारे में बड़ी-बड़ी बातें की जाती है।

ईवीएम खराब होने पर लोगों ने धरना दिया

संवाददाता

देहरादून। ईवीएम मशीन खराब होने से गुस्साये लोगों ने धरना देकर विरोध जताया।

आज यहां मतदान के दौरान छुटपुट घटनाएं होना स्वाभाविक होती है। वहीं कौलागढ प्रेमपुर माफी के बूथ नम्बर 87 में ईवीएम मशीन खराब होने की सूचना मिलते ही काफी संख्या में लोग वहां पर एकत्रित हो गये तथा उन्होंने मतदानकर्मियों पर चुनाव में गडबडी करने का आरोप लगाते हुए वहीं पर धरने पर बैठ गये। लोगों का गुस्सा देखकर वहां काफी संख्या में पुलिस पहुंच गयी तथा लोगों को समझाने का प्रयास किया गया। लेकिन वह ध रने पर बैठे रहे।

धरने पर बैठने वालों में विपुल नौटियाल, राजेन्द्र धवन, अनिल, संजय थापा का आरोप था कि मतदान अधिकारी गडबड कर रहे हैं जो बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। मशीन खराब की सूचना मिलते ही अधिकारी मौके पर पहुंचे और उन्होंने मशीन बदल दी जिसके बाद लोगों ने धरना समाप्त किया।

पूर्व सीएम का भाजपा पर चुनावों को प्रभावित किये जाने का आरोप

संवाददाता

देहरादून। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत द्वारा उत्तराखण्ड में मतदान से पूर्व भाजपा पर चुनावों को प्रभावित किये जाने का आरोप लगाया गया है। उन्होने कहा है कि कई सीटों पर भाजपा के लोगों द्वारा पैसे, शराब, कुकर, साड़ियां सहित कई चीजें बांटी जा रही है। जिसको लेकर चुनाव आयोग व प्रशासन भी मौन है।

उन्होने कहा कि कोटद्वार, लालकुंआ, हल्द्वानी, रामनगर, भीमताल व बागेश्वर में जहां जहां से भी खबरें आयी है उसकी एक लम्बी फेरहिस्त है। उन्होने कहा कि रूपये बांटते हुए मुख्यमंत्री की वीडियों वायरल हो रही है। यह सब देख कर भी चुनाव आयोग मौन है। उन्होने कहा कि कांग्रेस के आफिसों में छापा मारा जा रहा है और कोई आपत्तिजनक सामान न मिलने पर भी छापे की कार्यवाही इतनी लम्बी करी जा रही है कि कांग्रेस के लोग उस समय कोई और काम न कर सकें। उन्होने कांग्रेस के लोगों से अपील की है कि जहां जहां जो वीडियों उनको मिले है, उनको राज्य इलैक्शन कमीशन की वेबसाइड में अपनी कम्पलेन के साथ दर्ज कराये।

राज्यसभा सांसद अनिल बलूनी ने अपने पैतृक गांव में किया मतदान

संवाददाता

देहरादून। अपना वोट अपने गांव मुहिम के चलते राज्य सभा सांसद अनिल बलूनी द्वारा अपने गांव पहुंच कर मतदान किया गया। उनका कहना है कि इस मुहिम से पलायन रोकने में मद्द मिलेगी और गांवों में वोटरों की संख्या बढ़ेगी।

उत्तराखण्ड के राज्यसभा सांसद अनिल बलूनी द्वारा पौड़ी स्थित अपने गांव पहुंच कर पोलिंग सेन्टर में मतदान किया गया है। राज्यसभा सांसद अनिल बलूनी द्वारा पिछले कई सालों से अपना वोट अपने गांव नामक मुहिम चलायी जा रही है।

इस दौरान उन्होने कहा कि सभी लोगों को अपने गांव में वोट देने के लिए आना चाहिए। इससे पलायन पर तो रोक लगेगी ही साथ ही गांवो में वोटरों की संख्या भी बढ़ेगी।

कोरोना से डरे नहीं

सतर्क रहें, सुरक्षित रहें

एक नजर

इसरो ने सेटेलाइट ईओएस-04 को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपण किया

बेंगलुरु। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने २०२२ के पहले प्रक्षेपण अभियान के तहत पीएसएलवी–सी ५२ के जरिए धरती पर नजर रखने वाले सेटेलाइट ईओएस–०४ को सोमवार तड़के सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में भेज दिया। इस प्रक्षेपण को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर के पहले लॉन्च पैड से अंजाम दिया गया। ईओएस–०४ एक श्रडार इमेजिंग

सैटेलाइटश है जिसे कृषि, वानिकी और वृक्षारोपण, मिट्टी की नमी और जल विज्ञान तथा बाढ़ मानचित्रण जैसे अनुप्रयोगों एवं सभी मौसम स्थितियों में उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। पीएसएलवी अपने साथ जिन दो छोटे उपग्रहों को भी ले गया है, उसमें कोलोराडो विश्वविद्यालय, बोल्डर की वायुमंडलीय और अंतरिक्ष भौतिकी प्रयोगशाला के सहयोग से तैयार किया गया भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) का उपग्रह इन्सपायरसैट–१ भी शामिल है। इसमें एनटीयू, सिंगापुर और एनसीयू, ताइवान का भी योगदान रहा है।

बिधाननगर, सिलीगुड़ी, चंदरनगर और आसनसोल नगर निगम में टीएमसी ने किया कब्जा

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस ने सोमवार को पश्चिम बंगाल में चारों नगर निगमों बिधाननगर, सिलीगुड़ी, चंदरनगर और आसनसोल में जीत दर्ज की। राज्य निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। टीएमसी ने ४१ में से ३६ सीटों पर जीत दर्ज करते हुए बिधाननगर नगर निगम पर फिर से

कब्जा जमा लिया है जबकि विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी और मार्क्सवादी पार्टी (माकपा) यहां अपना खाता तक नहीं खोल सकीं। कांग्रेस ने एक सीट पर जीत दर्ज की और निर्दलीय उम्मीदवार एक वार्ड में जीता है। चंदरनगर में टीएमसी ने ३२ में से ३१ सीटें जीतीं जबकि माकपा ने एक सीट जीती है। सत्तारूढ़ पार्टी के लिए सिलीगुड़ी नगर निगम (एमएमसी) माकपा नीत वाम मोर्चे से छीनना सोने पर सुहागा रहा और उसने यहां पर ४७ में से ३७ सीटों पर जीत दर्ज की। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, भाजपा ने पांच सीटों पर कब्जा जमाते हुए विपक्ष का दर्जा हासिल कर लिया है जबकि वाम मोर्चा तीसरे स्थान पर चला गया है। उसे केवल चार सीटें ही मिली और कांग्रेस को एक सीट मिली है। सिलीगुड़ी में टीएमसी को ७८.७२ प्रतिशत मत मिले जबकि भाजपा और माकपा को क्रमशरू १०.६४ फीसद और ८.५ फीसद मत ही मिले।

रिलाइंस जल्द शुरू करेगी सैटेलाइट आधारित ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी

नई दिल्ली । रिलाइंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) ने सोमवार को घोषणा की कि जियो प्लेटफार्म लिमिटेड (जेपीएल) और एसईएस, एक वैश्विक उपग्रह–आधारित ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदाता ने उपग्रह–आधारित ब्रॉडबैंड सेवाओं के लिए संयुक्त उद्यम (जेवी) का गठन किया है। जेवी फर्म,

जियो स्पेस टेक्नोलॉजी लिमिटेड में जियो प्लेटफार्म का ५१ प्रति. और एसईएस ४९प्रति. का स्वामित्व होगा। कंपनी इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन का टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके अपना पहला सेटेलाइट बैकहाल– बेस्ड नेटवर्क लॉन्च करने की योजना बना रही है। जियो सैटेलाइट कम्युनिकेशंस लिमिटेड को कुछ महीने पहले मुकेश अंबानी की अगुवाई वाली टेल्को को शामिल किया गया था, जहां यह भारती समूह समर्थित–वनवेब, एलोन मस्क के स्टारलिंक, अमेज़न के प्रोजेक्ट कुइपर और टाटा–टेलीसैट के साथ प्रतिस्पर्धा करेगी। इस नए युग के ब्रॉडबैंड–फ्रॉम–स्पेस सेगमेंट में हिस्सेदारी के लिए एक दूसरे के साथ कड़ी टक्कर देगी। जियो की नई सैटेलाइट ब्रॉडबैंड सर्विस ग्रामीण और पहाड़ी और समुद्री इलाकों में उबड़खाबड़ इलाकों में रहने वाले यूजर के लिए उपलब्ध होगी। भारत में अधिकांश टेलीकॉम कंपनियां टावर्स को जोड़ने के लिए माइक्रोवेव का इस्तेमाल करती हैं क्योंकि फाइबर लाइन को ऐसी दुर्गम जगहों पर बिछाना बहुत महंगा है।

दिग्गज नेताओं में दिखा मतदान के प्रति उत्साह

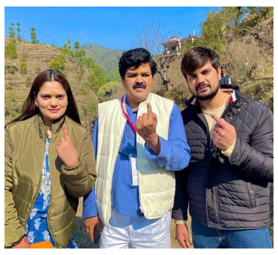

संवाददाता

देहरादून। आम जनता ने मतदान में कितनी रुचि दिखाई यह एक अलग विषय है, लेकिन उत्तराखंड के वीवीआइपी तथा नेताओं में मतदान को लेकर भारी उत्साह देखा गया। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह ने अपनी पत्नी के साथ दून में वोट डाला वहीं पूर्व मुख्यमंत्री व पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ रमेश पोखरियाल निशंक भी अपनी पुत्री के साथ मतदान करने पहुंचे।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी भी पूजा पाठ के बाद अपनी पत्नी व मां के साथ खटीमा में अपना मतदान करने पहुंचे। इस अवसर पर उन्होंने वोट डालने आए लोगों का अभिवादन किया और अपील की कि लोकतंत्र के इस महापर्व में वह अधिक से अधिक संख्या में वोट करें। उधर पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने भी आज अपने चुनाव क्षेत्र लाल कुआं में वोट डाला तथा लोगों से अपील की कि सभी लोग वोट जरूर डालें क्योंकि हर वोट की अपनी कीमत होती है। भाजपा के राज्यसभा सांसद ने आज अपने पैतृक गांव (नकोट) पौड़ी जाकर अपना वोट डाला। वही मसूरी से भाजपा प्रत्याशी गणेश जोशी ने भी दून के डोभालवाला

❑रामदेव सहित साधु, सन्यासियों ने किया मतदान

में जाकर अपना वोट डाला गया।

टिहरी सीट से भाजपा प्रत्याशी और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष किशोर उपाध्याय ने भी अपने परिवार के साथ टिहरी में मतदान किया। उन्होंने कहा कि यह हर व्यक्ति का महत्वपूर्ण अधिकार है इसलिए सभी को वोट जरूर डालना चाहिए, वोट ही वह माध्यम है जो आम जनता का अभिमत होता है। वोट के जरिए सभी को सत्ता में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने का यही मौका होता है। कांग्रेस के वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने अपने चुनाव क्षेत्र श्रीनगर में अपना वोट डाला और कहा कि जनता के अंदर जो उत्साह दिखाई दे रहा है वह परिवर्तन के संकेत हैं। भाजपा प्रत्याशी विशन सिंह चुफाल ने अपनी सीट डीडीहाट पर अपना मतदान किया, वही सतपाल महाराज ने भी अपने चुनाव क्षेत्र चोबट्टाखाल में वोट डाला। प्रीतम सिंह ने चकराता में अपना वोट डाला, कांग्रेस प्रत्याशी दिनेश अग्रवाल ने दून में अपना वोट डाला। योग गुरु बाबा रामदेव भी अपना वोट डालने से नहीं चूके वहीं हरिद्वार में बड़ी संख्या में साधु संतों ने मतदान किया।

उत्तराखंड में आज सुबह 8 बजे से मतदान शुरू हुआ लेकिन 9 बजे से ही दिग्गजों नेताओं में मतदान को लेकर भारी उत्साह देखा गया और वह वोट डालते दिखे।

मतदान के लिए बुर्जुगों में भी दिखा उत्साह

हमारे संवाददाता

देहरादून। उत्तराखण्ड में हो रहे विधानसभा चुनावों के लिए जहां युवाओं में उत्साह दिखायी दे रहा है वहीं मतदान के प्रति बुजुर्ग भी खासे जोश से लबरेज नजर आये है। इस क्रम में जहां रूड़की में 120 साल की बुर्जुग महिला मरियम ने मतदान किया वहीं राजधानी दून में 100 वर्षीय कमला देवी, 88 वर्षीय कमला गेरा द्वारा भी खासे उत्साह से अपना वोट डाला गया है।

लोकतंत्र के महापर्व में आज मतदान के लिए बुर्जुगों में खासा उत्साह देखा गया हैं। रूड़की के रामपुर गांव निवासी 120 वर्षीय बुर्जुग महिला मरियम ने आज अपना मतदान किया है। खास बात यह है कि यह बुर्जुग महिला चलने

फिरने में असमर्थ है। जिसके चलते उनके पोते उन्हे गोद में उठाकर पोलिंग

❑120 व 100 वर्षीय महिलाओं ने भी डाला अपना वोट

बूथ तक लाये।

बुर्जुग महिला ने बताया कि वह ऐसा प्रत्याशी चाहती है जो क्षेत्र का विकास करे साथ ही ऐसी सरकार चाहती है कि जो बेरोजगारी व मंहगाई पर अंकुश लगा सके। वहीं राजधानी दून के रायपुर विधानसभा क्षेत्र के केशरवाला पोलिंग बूथ पर 100 वर्षीय बुर्जुग महिला कमला देवी अपने पोते योगेश राणा सहित मतदान करने पहुंची। इस दौरान दादी पोते में मतदान के प्रति खासा उत्साह देखा गया।

राजपुर विधानसभा में आज 88 वर्षीय बुर्जुग महिला कमला गेरा द्वारा अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए लोकतंत्र के इस महापर्व पर अपना वोट डाला गया है। मतदान के बाद उन्होने लोगों से अपील की वह अधिक से अधिक संख्या में मतदान करें और देश को सशक्त बनाये।

महंत देवेन्द्र दास ने किया मतदान

देहरादून (सं)। झण्डा दरबार के महंत देवेन्द्र दास ने भी अपने मताधिकार का प्रयोग किया। आज यहां मतदान सुबह आठ बजे शुरू हुआ तो मतदान धीमी गति से चल रहा था। सुबह करीब आठ बजे झण्डा दरबार के महंत देवेन्द्र दास जी महाराज ने दर्शनीगेट स्थित ब्राइट एंजेल स्कूल में पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इस दौरान कुछ लोगों ने उनका आर्शीवाद भी प्राप्त कर मतदान किया।

कस्टमर केयर अधिकारी बन ठगे 85 हजार रूपये

संवाददाता

देहरादून। कस्टमर केयर अधिकारी बनकर खाते से 85 हजार रूपये निकाले। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार राजपुर रोड निवासी अमर कुमार मिश्रा ने राजपुर थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसके मोबाइल पर फोन आया और फोनकर्ता ने स्वंय को एसबीआई बैंक का कस्टमर केयर अधिकारी बताते हुए उसको बैंक का खाता अपडेट करने हेतु एप डाउनलोड करने के लिए कहा था। उसने जैसे ही एप डाउनलोड किया तो उसके खाते से 85 हजार 676 रूपये निकल गये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

आर.एन.आई.- 59626/94
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।
प्रधान संपादक
कांति कुमार
संपादक
पुष्पा कांति कुमार
समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार
कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, एडवोकेट
बैजनाथ, एडवोकेट
कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808
नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।